

पक्षाघात



एरण्ड



केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

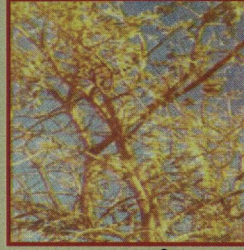
पक्षाघात क्या है?

किसी आघात अथवा बीमारी के कारण संज्ञावाही नाड़ी की विकृति से मांसपेशियों की स्वैच्छिक क्रियाओं का बंद होना। संज्ञा, चयन एवं मानसिक क्षमता की हानि।

बढ़ा हुआ वात दोष शरीर के एक भाग को, केन्द्रीय तंत्र एवम् अंगों के संवेदन कार्यों को प्रभावित करता है जिसको अर्धांग वात कहते हैं।

पक्षाघात के लक्षण क्या हैं ?

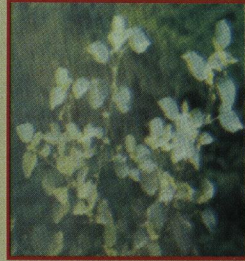
- चाल में विकृति यथा लंगड़ापन
- सुन्नता, प्रभावित भाग में पीड़ा
- तंत्रिका तंत्र का कार्य न करना
- बोलने में असमर्थता
- अत्यधिक अश्रुस्राव व लालास्राव के साथ मुख का विपरीत दिशा में हो जाना



शल्लकी

आयुर्वेद में पक्षाघात की चिकित्सा

- प्रारंभ से ही रसायन प्रयोग एवं रहन-सहन (जीवन शैली) में बदलाव
- औषधीय तैलों जैसे महानारायण तैल, दशमूल तैल, महामाष तैल से स्नेहन (हल्की मालिश)
- औषधीय क्वाथों से स्वेदन (सेक)
- मृदु विरेचन
- बस्ति
- नस्य



बला



सोंठ

कतिपय उपयोगी आयुर्वेदीय योग

- लशुनादि वटी
- योगराज गुग्गुलु
- त्रिफला चूर्ण
- महारासनादि क्वाथ
- दशमूलारिष्ट

पक्षाघात में कतिपय उपयोगी औषधीय पौधे

- बला (Sida cordifolia)
- निर्गुण्डी (Vitex negundo)
- रासना (Pluchea lanceolata)



निर्गुण्ठी

- गुग्गुलु (Commiphora Wightii)
- रसोन (Allium sativum)
- अश्वगंधा (Withania somnifera)
- शुण्ठी (Zingiber officinalis)
- एरण्ड (Ricinus communis)
- हरीतकी (Terminalia chebula)



रासना



अश्वगन्धा

विशेष पथ्यापथ्य

पथ्य (क्या करें) ✓

- ✓ काला चना, कुलथी, पलाण्डु (प्याज), रसोन (लहसुन), शुण्ठी/अदरक, मूली, कुष्माण्ड, मुद्ग (हरा मूंग) को नियमित रूप से भोजन में शामिल करें
- ✓ फल जैसे दाड़िम (अनार), आम, द्राक्षा (अंगूर) आदि



हरीतकी

अपथ्य (क्या न करें) ✗

- ✗ तीखा, मसालेदार अथवा नमकीन भोजन एवं विरुद्ध भोजन
- ✗ चना, मटर, जौ का अधिक सेवन
- ✗ अधिक भूखा रहना, अधिक व्यायाम, प्राकृतिक वेगों को रोकना, रात्रि जागरण
- ✗ मद्य एवं धूम्रपान का अधिक सेवन